" भारत की जनजातीय(आदिवासी) और लोक ज्ञान प्रणाली (छत्तीसगढ़ राज्य के सन्दर्भ में) "

स्वरुप राम , मनकू राम कोवासी

(अतिथि व्याख्याता) समाजशास्त्र, (अतिथि व्याख्याता) इतिहास ,

समाजकार्य एवम समाजशास्त्र

शासकीय नवीन महाविद्यालय कुटरू जिला बीजापुर, राज्य छत्तीसगढ़, भारत

सारांश-

भारत एक प्राचीन सभ्यता वाला देश है, जिसकी सांस्कृतिक जड़ें हजारों वर्षों पुरानी हैं भारतीय पुरातन संस्कृति वेदों, उपनिषदों, पुराणों, रामायण, महाभारत और विभिन्न दार्शनिक परंपराओं में निहित माना जाता है किन्तु हम अगर इतिहास की पन्नो को पलटते है तोह पता चलता है की वेदों पुरानो से भी पहले एक गैर वैदिक संस्कृति का आस्तित्व रहा है जिसका लिखित प्रमाण तोह नहीं अपितु पुरातात्विक अवशेष जरुर प्राप्त हुए है जिसमे एक सुव्यवस्थित नगर , मानव जीवन दिनचर्या क्रियाकलाप की पुष्टि की गयी है और उस सभ्यता को हम सिन्धु घांटी सभ्यता के नाम से जाना जाता है जिसके वंशज वर्तमान के अनुसूचित जनजाति (आदिवासी) को वैज्ञानिक पुरातात्विक प्रमाणिक आधार पर माना जाता है और उनकी भी अपनी ज्ञान परंपरा रीती रिवाज रही इसलिए आदिवासियियो की ज्ञान परंपरा को हम भारत का प्राचीन परंपरा के रूप में अध्ययन कर सकते है , भारत के विभिन्न भागो में निवास करने वाले आदिवासियो की रीती रिवाज परंपरा कई हजारो वर्षो पुराणी है जो मानव और प्रकृति के बीच सीधा सम्बन्ध स्थापित करते है जो आने वाली पीढ़ी को जीने के लिए बिना प्रकृति को नुकशान पहुचाये मार्ग प्रशस्त करेगी आदिवासियियो के रीती रिवाज परंपरा में जिवंत है इनकी जिवंत परंपरा उनके संस्कारो , तीज त्योहारों पंडूम , लोक गीत, कहानियो, मुहावरों , परंपराओ में नज़र आती है जैसे माटी तिहार (बीज तिहार), दियारी , अमूश ,बिहा गीत , लेजा परब नृत्य, जतरा , ककसाड़, गोटुल ,धुमकुरिया आदिवासियो के ज्ञान परंपरा को अपनाते हुए पुरे मानव समाज आने वाले भविष्य में भी प्रकृति से सहसंबंध बनाते हुए जीवन यापन करने से कई हजारो सालो तक जीवन चलती रहेगी .

मुख्य शब्द – भारतीय ज्ञान परंपरा, अनुसूचित जनजाति (आदिवासी), संस्कृति, परंपरा, तीज त्योहारों , जतरा . ककसाड़

शोध प्राविधि :- शोध पत्र का विषय **"भारत की जनजातीय (आदिवासी) और लोक ज्ञान प्रणाली(छत्तीसगढ़ राज्य के सन्दर्भ में)"** है| प्रस्तुत शोध पत्र में प्राथमिक (अवलोकन, साक्षात्कार) एवम द्वितीयक(पुस्तके,शोध पत्र,सरकारी रिपोर्ट) स्रोतों का प्रयोग किया गया है तथा वर्णात्मक प्राविधि का उपयोग किया गया है |

शोध का उद्देश्य :- "भारत की जनजातीय(आदिवासी) और लोक ज्ञान प्रणाली "

परिचय :- भारत विभिन्न धर्म, पंथ , संस्कृतियों, भाषाओं और परंपराओं से भरा देश है। इसी विविधता के बीच आदिवासी समुदायों का विशेष स्थान है। "आदिवासी" शब्द का अर्थ है – 'आदि' (प्रारंभिक) और 'वासी' (निवासी), अर्थात् वे लोग जो भारत देश के खोज एवम निर्माण के समय से निवास करते आ रहे है भारत के मूलवासी माने जाते हैं ।(माननीय सुप्रीम कोर्ट के द्वारा 5 जनवरी 2011 को कैलाश व् अन्य बनाम महाराष्ट्र राज्य मामले में फैसला सुनाये है)

भारतीय संविधान के अंतर्गत इन्हें अनुसूचित जनजाति (Scheduled Tribes) कहा गया है । भारत में आदिवासी समुदाय देश की कुल जनसंख्या का लगभग 8–9 प्रतिशत हिस्सा हैं । ये मुख्यतः मध्य भारत, पूर्वोत्तर भारत, पश्चिमी घाट और कुछ दक्षिणी राज्यों में निवास करते हैं । संविधान के अनुसार, किसी भी समुदाय को "आदिवासी" या "अनुसूचित जनजाति" का दर्जा मुख्यतः अनुच्छेद 342 के तहत राष्ट्रपति की अधिसूचना द्वारा दिया जाता है, जिसकी परिभाषा अनुच्छेद 366(25) में दी गई है । इसके अतिरिक्त, पाँचवीं और छठी अनुसूची तथा अन्य अनुच्छेद उनके प्रशासन, संरक्षण और विकास से संबंधित विशेष अधिकार प्रदान किया गया हैं । मध्य भारत में छत्तीसगढ़, झारखंड, मध्य प्रदेश और ओडिशा प्रमुख हैं ।पूर्वोत्तर में नागालैंड, मिज़ोरम, मेघालय और अरुणाचल प्रदेश में बड़ी संख्या में जनजातियाँ रहती हैं ।आदिवासी समुदाय प्रकृति के निकट जीवन जीते हैं, जंगल, पहाड़ और नदियाँ उनके जीवन जीने के लिए अभिन्न अंग हैं । उनकी आजीविका मुख्यतः कृषि, शिकार, वनोपज संग्रह और हस्तशिल्प पर आधारित होती है । उनकी संस्कृति में लोकनृत्य, लोकगीत और पारंपरिक उत्सवों का महत्वपूर्ण स्थान है । आदिवासियियो के विवाह, जन्म और मृत्यु से जुड़े संस्कार भी विशिष्ट होते हैं जो किसी भी धर्म के संस्कारो से मेल नहीं खाता है । आदिवासीयो में विभिन्न प्रकार के चित्रकला , वारली कला,हस्तशिल्प , लोकनृत्य ,लोकनाट्य , लोक कथाए , शरीर सज्जा आदि प्रसिद्ध हैं |

छत्तीसगढ़ राज्य भारत का एक आदिवासी बाहुल्य राज्य है यंहा की कुल जनसँख्या का लगभग ३०.6% जनसँख्या आदिवासियो की है, यंहा मुख्य रूप से गोंड़, उरांव, हल्बा कंवर बैगा धुर्वा आदिवासी रहते है | यंहा के आदिवासियियो का जीवन यापन का मुख्य स्रोत मुख्यता कृषि ,वनोपज संग्रह ,और पशुपालन है , महुआ, इमली,तेंदुपत्ता,साल बीज, चार चिरोंजी आदि इनके जीवन का आर्थिक आधार है |

मुख्य प्राकृतिक पर्व :- माटी तिहार , आमा तिहार (मरका पंदुम) सरहुल , अक्ती , अमुस तिहार , भोजली ,नवाखाई , शारदीय नवरात्री , देवारी , गोबर्धन , छेरछेरा , चैत नवरात्री , गोटुल , धुमकुरिया |

माटी तिहार :- माटी तिहार आदिवासियों का एक प्रमुख प्राकृतिक पर्व है यह तिहार चैत महीना में मनाया जाता है माटी तिहार को अलग-अलग क्षेत्र में अलग-अलग नाम से जाना जाता है जैसे बीज तिहार, विज्जा पंदुम, गादी पंदुम कहा जाता है । आदिवासियियो के अनुसार यह त्यौहार वर्ष का प्रथम त्यौहार के रूप में भी माना जाता है इस त्यौहार में ग्रामीण अपने घरों से धान के बीज को परसा पत्ता के चिपड़ी(दोना) में ले जाते हैं इस त्यौहार में ग्रामीणों के द्वारा ले जाया गया धान को ग्राम के देवी के समक्ष रखा जाता है तथा गांव के पुजारी के द्वारा उसे गांव के देवी को उनके परंपरा अनुसार मुर्गी अंडा छिंद अगरबत्ती धूप नारियल आदि को अर्पण किया जाता है उसके पश्चात ग्रामीणों द्वारा ले गए धान को ग्राम देवी को समर्पित करते हैं गांव के देवी को धन समर्पित करने एवं सेवा देने के पश्चात ग्रामीण वंहा खाना पका कर खाते है उसके पश्चात् चिपड़ी में थोड़ा-थोड़ा धान घर लेकर वापस जाते हैं जिसे बाद में बुवाई किया जाता है छत्तीसगढ़ के मध्य भाग में इसे अक्ती पर्व के नाम से जाना जाता है |

इनके इस कार्यों को देखकर समझ आता है कि आदिवासियों के द्वारा अपने कोई भी कार्य करने से पहले प्रकृति को सेवा दिया जाता है जैसे माटी तिहार के पश्चात ही आदिवासियों के द्वारा धान बुवाई का कार्य किया जाता है इस पर्व का मुख्य उद्देश्य माटी देव को सम्मान करते हुए सबसे पहले उनका धान समर्पित किया गया उसके पश्चात ही धान बुवाई का कार्य प्रारंभ करते है |

आमा तिहार :- आम तिहार आमटिहार मती तिहार बनाने के पश्चात अलग-अलग क्षेत्र में अलग-अलग समय में मनाया जाता है आम त्यौहार मनाने का मुख्य उद्देश्य आम का बी का पूर्ण रूप से परिपक्व होना ताकि आम का उपभोग करने के पश्चात उसके बीच को फेंकने पर पौधों का रूप धारण कर सके पौधे इस आम पांडू में आम के परिपक्व होने के पश्चात उसे ग्राम देवी को समर्पित कर छोटे-छोटे टुकड़ों में काटकर ग्रामीणों को दिया जाता है आम पांडु के पश्चात ही ग्रामीण आम का उपभोग कर सकते हैं|

अमुस तिहार :- अमुस तिहार धान बुवाई कार्य पूर्ण होने के बाद मनाए जाने वाली पर्व है इस पर्व मैं कृषि कार्य में सहयोगी पशुधन(गाय , बैल . भैंस) के स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए जंगलों से प्राप्त जड़ी बूटी जिसमें बेलवा , टेमरू बूटा, रसना , सतावरी , लगड़ा जड़, बैला गोंदरी , कावरा कांदा , इमली नमक, अदरक इत्यादि जड़ी बूटियां को कूट कर पोटली बनाकर गाय बैल भैंस को खिलाया जाता है इसका मुख्य उद्देश्य खेती कार्य में सहयोगी पशुधनों को हल चलाने के समय लोहा लगने, या अन्य कारणों से होने वाले बिमारियो एवम मौसमी बीमारियों से बचाना है। घरों के द्वार पर बाहरी शक्ति , प्रेत आत्माओ से बचाव के लिए भी बेलवा डारा, सेदावरी , टेमरू डारा , को घर के सामने दरवाजा पर लगाया (खोचना) जाता है साथ ही जड़ी बूटियां को खेतों के बीच में भी गड़ा जाता है ताकि खेतों में भी फसल को नुकसान पहुंचाने वाले कीड़े मकोड़े एवं बीमारियों से रक्षा की जा सके | इस तिहार में गाँव से टोकरी सुपा झाड़ू आदि को गाँव के सीमा रेखा से बाहर निकालते है , इसे सामान्य छेत्रो में हरेली के नाम से भी जाना जाता है |

नवाखानी तिहार :- नया खानी तिहार धान पकने के बाद मनाया जाने वाला तिहार है इस तिहार में ग्रामवासी एक तिथि तय करके धान की बाली एवम नए फसल गांव के देवी को अर्पण किए जाने के लिए सूअर, नारियल, धुप एवं अन्य सामग्री लेकर ग्राम के देवी के पास एकत्रित होकर मनाया जाता है नवाखानी प्रत्येक कुटुंब के द्वारा भी अपने-अपने कुटुंब के साथ नवाखानी मनाते हैं यह त्यौहार अलग-अलग क्षेत्र में अलग-अलग समय पर मनाया जाता है इस त्यौहार को मनाने के लिए धान के पकाने का इंतजार किया जाता है धान के पकने के पश्चात देवी में अर्पण कर इसका भोग किया जाता है जिस तरह से माटी तिहाड़ में धान की बुवाई से पहले गांव की देवी को सेवा दिया जाता है इस तरह धान के पकाने के बाद सेवा देकर अपने गोत्र पेड़ के पत्ती में उसको ग्रहण किया जाता है नया खाने को अन्य क्षेत्रों में कोढ़ता पडुम भी कहा जाता है|

कुंवार नवरात्री / दशराह / जंवारा तिहार(गेंहू बीज परीक्षण):- यह भादो ,कुंवार(सितम्बर -अक्टूबर) माह के मध्य मनाया जाना वाला पर्व है इस तिहार में गेंहू के बीज को बांस की टोकरी में जगा कर देखा जाता है जिससे उनमें क्या क्या बीमारी, कीढे आ सकता है और इस बार पैदावार कैसे रह सकता है का परीक्षण किया जाता है | दसराहा ग्राम व्यवस्था को अगर देखते हैं तो ग्राम व्यवस्था में दसराहा , दसराव की व्यवस्था को हम समझते हैं अर्थात गांव के दसों दिशाओं में 10 प्रकार के देवी देवताओ का जगह है जो हमारे गांव को सुरक्षित रखते हैं हमारे मानव क्रियाकलापों क्रषि, वनों से वन उत्पाद ,लकड़ी, आदि लाने उपभोग में सहयोग करते हैं 10 राह मतलब 10 रास्ते जो हमारे जीवन को आगे बढ़ाते हैं और गांव की रक्षा करते हैं इस दिन ग्राम के सभी ग्राम के गायता , बैगा,पेरमा, पुजारी , देव पंच आदि के द्वारा उसे 10 राहों की सेवा की जाती है ताकि हमारे गांव को किसी भी बाहरी शक्तियों से सुरक्षित रखा जा सके |

देवारी/ दिवाढ़ /दियारी / गोबर्धन :- देवारी/ दिवाढ़ /दियारी / गोबर्धन यह पर्व धान काटने के पश्चात कार्तिक (अक्टूबर नवम्बर) माह में मनाया जाता है धान काटने एवम अन्य नए फैसले जो भूमि में पैदा हुए हैं के साथ-सा दलहन ,कद्दू , कंदमूल आदि को पकाकर कृषि कार्य में सहयोगी हमारे पशुधन को सम्मान पूर्वक खिलाए जाने वाला पर्व है , इस घर के पशुधानो को नहलाकर सोहराई बांध कर नए फसल जिसे पकाया गया है उसे पशुधन के देवता को अर्पण करने के बाद नए सुपा,कपड़ा आदि में रख कर खिलाया जथा है साथ में खाया भी जाता है इस पर्व को मनाने से यह साफ नज़र आता है कि हमारे पूर्वजों के द्वारा प्रत्येक जीवो के साथ पारिवारिक सह संबंध रहते हुए उनका सम्मान करते हुए जीवन यापन करते आ रहे हैं अर्थात प्रत्येक जीवो का सम्मान करना |

करसड़ / करसाढ़ :- करसड प्रत्येक कुटुंब के द्वारा अपने पेन के नाम से अलग अलग समय में मनाया जाता है जो 2 से 3 दिनों तक चलता है , करसड़ का मुख्य उद्देश्य अपने परिवारों से मिलना और नए सदस्यों को सभी से मिलाना साथ ही नए फसल का उपभोग किया जाता है |

गोटुल :- गोटूल कई हजारो सालो से संचालित शिक्षा का केंद्र है जो वैदिक युग के गुरुकुल से भी पूर्व की मानी जाती है जिसमे बाल्यावस्था से ही बच्चो को सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक विकास के लिए प्रसिक्षित किये जाते रहे है गोटुल में सामाजिक नियमों, प्रकृति के साथ जीवन निर्वाह करने के तरीके , आर्थिक सशक्तिकरण का कार्य किया जाता है गोटुल के पुरुष सदस्य को चेलिक एवम पुरुष सदस्य के मुखिया को शिलेदार तथा महिला सदस्य के मुखिया को बेलोसा तथा कहा जाता है महिला सदस्यों को मोटियारिन कहा जाता है| इसे युवा गृह बके नाम से भी जाना जाता है गोटुल की तरह ही अन्य आदिवासियियो में भी शिक्षा का केंद्र स्थापित थे जिसे कई नाम जैसे धुमकुरिया , घसरवासा , रंगबंग, गितिओना , धागडा / धागड़ी घर, धन्गाबक्सर आदि |

निष्कर्ष:-

बीज तिहार जब विज्ञान के पास बीज परीक्षण की विधि नहीं थी तब हमारे पुरखों के द्वारा बीच परीक्षण कर फसल में आने वाले कीड़े मकोड़े एवं बीमारियों की जानकारी लेकर उसके संरक्षण के लिए प्राकृतिक जड़ी बूटियां , प्राकृतिक नुक्से का उपयोग किया जाता था |

आम तिहार के माध्यम से प्रकृति में संतुलन बनाए रखने के लिए आम का परिपक्व होने के बाद ही उसका उपभोग किया जाता था ताकि उपभोग के बाद आम के बीच को फेंकने पर पुनः पेड़ का रूप ले सके |

अमुस तिहार केव माध्यम से यह बताते है है की मानव जीवन के साथ ही पशुधन (गाय बैल आदि) भी हमारे जीवन में सहयोगी है जिसकी स्वास्थ्य जीवन का ध्यान रखना भी हमारी जिम्मेदारी है |

दियारी तिहार के माध्यम से हमारे पुरखे मानव जीवन के सहयोगी के रूप में जीव जंतुओं का सम्मान करते हुए उनके साथ जीवन जीने की महत्व को बताते हैं |

नयाखानी तिहार में भूमि से उत्पन्न नए फलों को जब फल परिपक्व हो जाता है तब उसको तोड़कर उपभोग करना एवं भूमि एवम पूर्वजो को उनके सम्मान के रूप में अर्पित करना अर्थात जिनके सहयोग से जीवन यापन हम कर रहे हैं उनका सम्मान करना

करसड आयोजन के माध्यम से हमें हमारे परिवार के सदस्यों के सम्मान एवं परिचय का एक दूसरे को जानना एवं नई फसलों के उपयोग से पहले भूमि को ग्राम देवी देवताओं को सम्मान के साथ अर्पण करने को सीखता है

गोटुल जो की एक शिक्षा का केंद्र है के माध्यम से नव पीढ़ी , युवा पीढ़ियां में सामाजिक सांस्कृतिक एवं आर्थिक सशक्तिकरण कर जीवन जीने को बताते हैं

आदिवासियों के विभिन्न तीज त्योहार परंपरा जैसे बीज तिहार, माटी तिहार, अमुस तिहार, जंवारा . नवाखानी , दिवारी के द्वारा हमने देखा कि विज्ञान के आविष्कारों , वैदिक युग से पहले भारत में आदिवासियों के द्वारा विभिन्न क्रियाकलाप वैज्ञानिक तरीकों से, वनों में पाए जाने वाले वन औषधि, वन उत्पाद एवं जीव जंतुओं के सहयोग से प्रकृति को नुकसान पंहुचाये बिना अपना जीवन यापन कर रहे थे , प्राचीन समय में प्रकृति के साथ सहसंबंध जीवन जीते हुए लंबी आयु तक जीते आ रहे थे |

वर्तमान समय में विज्ञान के आविष्कारों के लाभ के साथ-साथ उनके हानिकारक प्रभाव भी इस प्रकृति के साथ मानव जीवन में भी पड़ा है वर्तमान में नवीन पीढ़ी एवं युवा वर्ग पुराने जीवन पद्धति को नकारते हुए आधुनिकीकरण के दुनिया में प्रवेश कर प्राकृतिक नियमों का उल्लंघन कर प्रकृति का विनाश करते हुए जीवन यापन कर रहे हैं विभिन्न कार्यों के द्वारा मनुष्य स्वयं के एवं प्रकृति में पाए जाने वाले जीव जंतुओं के जीवन को नुकसान पहुंचा रहे हैं

भविष्य को ध्यान में रखते हुए हमें हमारे पुरखों के नियमों के अनुसार प्रकृति से संतुलन बनाते हुए विज्ञान के साथ-साथ प्रकृति में उत्पन्न प्रकृति से प्राप्त वन उत्पादों को बहुत ही ध्यान पूर्वक उपयोग करने की आवश्यकता है ताकि आने वाला भविष्य हमारे आने वाले पीडिया के लिए सुरक्षित रहे एवं मानव जीवन कई हजार सालों तक चला रहे|

ग्रन्थ सूचि:-

1 - बस्तर क्षेत्र अदिवासी विकास प्रधिकरण हल्बा जनजाति सामाजिक ताना-बाना प्रथम संस्कर सितंबर 2023|

2- बस्तर क्षेत्र अदिवासी विकास प्रधिकरण कोया कुटमा जनजाति सामाजिक ताना-बाना प्रथम संस्कर सितंबर 2023|

3- बस्तर क्षेत्र अदिवासी विकास प्रधिकरण मुरिया जनजाति सामाजिक ताना-बाना प्रथम संस्कर सितंबर 2023|

4- बस्तर क्षेत्र अदिवासी विकास प्रधिकरण भतरा जनजाति सामाजिक ताना-बाना प्रथम संस्कर सितंबर 2023|

5- बस्तर क्षेत्र अदिवासी विकास प्रधिकरण मुंडा जनजाति सामाजिक ताना-बाना प्रथम संस्कर सितंबर 2023|

6- बस्तर क्षेत्र अदिवासी विकास प्रधिकरण धुरवा जनजाति सामाजिक ताना-बाना प्रथम संस्कर सितंबर 2023|

7- बनर्जी जाॅयती प्रसाद शिक्षा प्रोफेसर(सेवानिवृत्ति)भारत में शिक्षा अतीत वर्तमान-भविष्य खंड 1,कोलकाता विश्वविद्यालय।

8-ब्रह्मानंदम टी. और बसु बादू टी. जुलाई-दिंसबर 2016 शेडयूल्ड वाइब्स के बीच शैक्षिक सांख्किीः मुददे और चुनौतियां द एनईएचयू जर्नल वाल्यूम ।

9- भारत में हल्बा। 5 राम उमा,इश्यूज इन ट्राइबल एजुकेशन इन बस्तर छत्तीसगढ़ लोकरत्न 2011।

10- सेंसारोफ इंडिया (2001) जनगणना रिर्पोट सरकार भारत सरकार नई दिल्ली।

11- वैस्तव टी.के. (1993)गोंड जनजाति का भोजन एवं पोषण स्थिति (छिंदवाड़ जिले का विशेष संदर्भ)जनजातिय अनुसंधान संस्थान भोपाल का बुलेटिन।

12- (1993) जशपुर नगर राज्य के उराँव के भोजन उपभोग पैटर्न और पैटर्न और पोषक तत्वों के सेवन पर एक अध्यन। जनजातिय अनुसधान संस्थान भोपाल।

13-कुम पी.वी. (1991) कमरों का श् ारीरिक विकास और पोषण संबंधी अध्ययनः छत्तीसगढ़ की एक आबादी अप्रकाशित पीएच.डी.थीसिस पं. को सौंप दिया गया। रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय।

14- डंड ए.के. (1990) भारत मे जनजातियाँ मैन इन इंडिया।

15 - रायपुर (1988) मध्यप्रदेश के बेगा चक क्षेत्र में बैगाओं के भोजन उपभोग पैटर्न पर एक अध्ययन।

16 बिस्वा एस.और मुखर्जी डी.पी. (1983) सरगुजा जिले(म.प्र.) के कंवर और उराँव के बीच आहार सर्वेक्षण । हम एससी 32ः130-137।

17 एटर्जी एम.1982 गोंड की तुलनात्मक मानवमिति गारियाबंद ब्लाॅक की हल्बा और गैर आदिवासी आबादी छत्तीसगढ़ क्षेत्र।

18 भारत के सेंसस 1981 प्रांभिक रिपोर्ट मध्य प्रदेश जिला जनगणना पुस्थिका -रायपुर।

19-अहमद एस.एच.1976 सरगुजा जिले के कोडाकस का मानवश् ास्त्र (एमपी)मैन आॅफ इंडिया 362-117 बसु ए.1970 मालघाट वन के कुर्कस की मपनवमिति मैन इन इंडिया ।

20- सेन एम. 1975 छत्तीसगढ़ के बिंझवार एक आनुवंशिक अध्ययन।

21- रक्षित एच.के.1974 एंथ्रोपोमेट्री आॅफ बस्तर ट्रइब्स मैन इन भारत ।

22- रायपुर जिला राजपत्र 1973 हलबास का परिचय पृष्ठ 116।

Copyright & License:

© Authors retain the copyright of this article. This work is published under the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0), permitting unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.